हिन्दी साहित्य का इतिहास
(आदिकाल)

बी.ए. तृतीय वर्ष

(तृतीय प्रश्नपत्र)

प्रस्तुतकर्ता

डॉ. जगदीश शरण
सहायक प्रोफ़ेसर हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय भोजपुर,
मुरादाबाद

स्वयंनिर्मित

Scanned with CamScanner

1

इकाई - 1 हिन्दी साहित्य का इतिहास

आदिकाल : यह हिन्दी साहित्य का पहला काल है। इसकी अवधि सम्वत् 1050 से लेकर सम्वत् 1375 तक मानी जाती है। विभिन्न विद्वानों ने इसका नामकरण इस प्रकार किया है ;

1.	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	: वीरगाथा काल
2.	डॉ० रामकुमार वर्मा	: सन्धिकाल और चारणकाल
3-	राहुल सांकृत्यायन	: सिद्ध-सामन्त काल
4-	महावीरप्रसाद द्विवेदी	: बीजवपन काल
5.	हजारीप्रसाद द्विवेदी	: आदिकाल
6-	मिश्रबन्धु	: आरम्भिक काल और राशोकाल
7.	चन्द्रधर शर्मा गुलेरी और डॉ० धीरेन्द्र वर्मा	: अपभ्रंश काल
8-	जार्ज ग्रियर्सन	: चारणकाल
9-	डॉ० गोवर्धन शर्मा	: प्रस्तावना काल

परिस्थितियाँ : हर्षवर्धन-साम्राज्य का विखण्डन। छोटे-छोटे राज्यों का परस्पर लड़ना, विदेशी मुस्लिम आक्रमणकारियों का अत्याचार। बौद्ध धर्म का पतन, जैन-शैवादि का उत्थान, हिन्दू धर्म अनेक सम्प्रदायों में विभाजित, सिद्धों, योगियों, कापालिकों आदि के चमत्कारपूर्ण कार्य, जातिभेद तथा छुआछूत का बोलबाला, सामन्तवाद का पतन, उच्च और निम्न वर्गों में समाज विभाजित, जनसाधारण की दयनीय स्थिति, हिन्दू-मुस्लिम संस्कृति में परस्पर टकराव, कला को बढ़ावा, राज्याश्रय साहित्य का सृजन, वीरकाव्य सृजन हेतु उचित वातावरण का होना आदि आदिकाल की परिस्थितियाँ रही हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का यह प्रसिद्ध कथन द्रष्टव्य है — "राजा भोज की सभा

खड़े होकर, राजा की दानशीलता का लम्बा-चौड़ा वर्णन करके लाखों रुपये पाने वाले कवियों का समय बीत चुका था। राज-दरबारों में शास्त्रार्थों की वह धूम नहीं रह गयी थी। पाण्डित्य के चमत्कार पर पुरस्कार का विधान भी ढीला पड़ गया था। उस समय तो जो-जो भाट या चारण किसी राजा के पराक्रम, विजय, शत्रु-कन्या-हरण आदि का अत्युक्तिपूर्ण आलाप करता था, रणक्षेत्रों में जाकर वीरों के हृदय में उत्साह की उमंगें भरा करता था, वही सम्मान पाता था।"

— हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ० 31

प्रमुख प्रवृत्तियाँ :

1- आश्रयदाताओं की अतिशयोक्तिपूर्ण स्तुति
2. व्यापक राष्ट्रीयता का अभाव
3- ऐतिहासिक विवेक की न्यूनता
4- भाषा एवं छन्दों की विविधता
5- वीरप्रधान काव्यों की रचना
6- अपभ्रंश भाषा का प्रयोग
7- रासो ग्रन्थों की रचना
8. प्रबन्धकाव्यों की रचना

प्रमुख कवि :

अब्दुल रहमान (सन्देश रासक)
स्वयंभू (पउमचरिउ, ~~रिट्ठ~~ रिट्ठणेमि चरिउ)
धनपाल कवि (भविस्सयत कहा)
जोइन्दु (परमात्म प्रकाश)
मुनि रामसिंह (पाहुड़ दोहा)
चन्दवरदाई (पृथ्वीराज रासो)
जगनिक (परमाल रासो)
विद्यापति (कीर्तिलता, कीर्तिपताका)
नरपति नाल्ह (बीसल देव रासो)

Scanned with CamScanner

दलपति विजय (खुमाण रासो)
नल्हसिंह भाट (विजयपाल रासो)
पुष्पदन्त (हरिवंशपुराण)
कनकामर (करकण्ड चरिउ)
शालिभद्र सूरि (भरत बाहुबलि रास)
भट्ट केदार (जयचन्द प्रकाश)
मधुकर कवि (जयमयंक जसचन्द्रिका)
श्रीधर (रणमल्ल छन्द)

प्रसिद्ध रचनाएँ :

सन्देश रासक : रासो परम्परा का सर्वाधिक प्रामाणिक और पहला काव्य ~~ग्रन्थ~~ ग्रन्थ। रचयिता - मुल्तान निवासी अब्दुल रहमान। कथा - इसकी प्रोषितपतिका नायिका द्वारा ~~एक~~ किसी पथिक के द्वारा अपने मुल्तान-प्रवासी पति को सन्देश भिजवाना। ग्रन्थ में 223 छन्द। भाषा अपभ्रंश।

~~पउमचरि~~ पउमचरिउ : अपभ्रंश के सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य के रूप में गणना। रचयिता - जैनकवि स्वयंभू। कृति विमलसूरि कृत 'पउमचरिउ' की ऋणी। कथा पाँच काण्डों में विभाजित। कृति में रामकथा का वर्णन। भाषा अपभ्रंश।

रिट्ठणेमि चरिउ : रचयिता - जैन कवि स्वयंभू। महाकाव्यों में गणना। कुल 112 सन्धि और 1937 कड़वक। कुल चार काण्ड। कथा का आधार - महाभारत और हरिवंशपुराण। भाषा अपभ्रंश। कृष्णचरित्र का वर्णन।

महापुराण : रचयिता - पुष्पदन्त। भरत के आश्रित कवि। महाकाव्यों में गणना। तीन खण्ड। तिरसठ महापुरुषों का वर्णन। भाषा अपभ्रंश।

हरिवंशपुराण : रचयिता - धवलकवि। 24 तीर्थंकरों की स्तुति। सन् 1925 ई. 'हरिवंशपुराण' का प्रकाशन। भाषा अपभ्रंश।

Scanned with CamScanner

णायकुमारचरिउ : खण्डकाव्य। नौ सन्धियों में प्रमुखत: नागकुमार का चरित्र-वर्णन। रचयिता – पुष्पदन्त। भाषा अपभ्रंश।

करकंडचरिउ : रचयिता – मुनि कनकामर। काव्य 10 सन्धियों में विभक्त। करकंडु महाराजा का चरित्र-वर्णन।

बौद्धगान और दोहा : यह संकलन है जिसमें सरहपा, कण्हपा आदि सिद्धकवियों की रचनाएँ शामिल हैं। ~~सम्पा~~ सम्पादक – हरप्रसाद शास्त्री।

पाहुड़ दोहा : रचयिता जैनमुनि रामसिंह। पाहुड़ का अर्थ — उपहार। कुल 22 पदों (मुख्यत: दोहों) में आध्यात्मिक चिन्तन। ब्राह्माचारों का जोरदार खण्डन।

ढोला मारू रा दूहा : भाषा राजस्थानी। ढोला और मारु की प्रेमकथा। रचयिता जैनकवि कुशललाभ। कबीर की साखियों में ~~ढोल~~ ढोला मारू रा दूहा के बहुत-से दोहे ज्यों के त्यों प्राप्त।

कीर्तिलता : रचयिता विद्यापति। चार पल्लवों (भागों) में राजा कीर्तिसिंह के पराक्रम का वर्णन। भाषा साहित्यिक अपभ्रंश।

भविसयत्तकहा : एक व्यापारी भविष्यदत्त की कथा का अलौकिक वर्णन। रचयिता – धनपाल। 3 प्रकार की कथाएँ तथा 22 सन्धियाँ। 'सुयपंचमी' इसका दूसरा नाम।

कुमारपाल प्रतिबोध : रचयिता – जैनकवि सोमप्रभ सूरि। रचनाकाल सम्वत् 1241। भाषा संस्कृत-प्राकृत। सोलंकी राजा सिद्धराज जयसिंह के भतीजे कुमारपाल को उपदेश दिए जाने की कथा।

Scanned with CamScanner

मुंजरास : मालवा के राजा मुंज और कर्नाटक के राजा तैलप की बहिन मृणालवती की प्रेमकथा का वर्णन। रचयिता – अज्ञात।

भरतेश्वर बाहुबली रास : रचयिता शालिभद्र सूरि। रचनाकाल – सन् 1184 ईस्वी। "जैन-साहित्य की रास-परम्परा का प्रथम ग्रन्थ" (मुनि जिन विजय)। ग्रन्थ में ऋषभदेव के दो पुत्रों भरतेश्वर और बाहुबली के युद्ध का विस्तृत वर्णन। कुल 266 छन्द।

चन्दनबाला रास : रचयिता कोई जैनकवि आसगु। कुल 35 छन्दों का खण्डकाव्य। ग्रन्थ में चम्पा नगरी के राजा दधिवाहन की पुत्री चन्दनबाला के सतीत्व की कथा का वर्णन। भाषा अपभ्रंश।

स्थूलिभद्र रास : रचयिता जिनधर्मसूरि। रचनाकाल सन् 1209 ईस्वी। ग्रन्थ में कोशा नामक वेश्या के साथ भोग-लिप्त रहने वाले स्थूलिभद्र की कथा।

बीसलदेव रासो : रासो-परम्परा का महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ। रचयिता – नरपति नाल्ह। लगभग 100 पृष्ठों में 128 छन्दों, चार खण्डों और दो हजार चरणों का काव्य। भाषा – राजस्थानी। ग्रन्थ में अजमेर के प्रतापी राजा बीसलदेव और मालवा के भोज परमार की कन्या राजमती की प्रणय-कथा का वर्णन। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का ग्रन्थ को 'रासो' मानने से इनकार। उनके अनुसार यह वीरकाव्य न होकर नितान्त शृंगारपरक काव्य है।

परमाल रासो : अन्य नाम – आल्हखण्ड। रचयिता – कालिंजर के राजा परमाल का आश्रित कोई जगनिक भाट। लोककाव्य के रूप में प्रसिद्ध इस ग्रन्थ में महोबा के दो प्रसिद्ध वीरों आल्हा और ऊदल के पराक्रम का वर्णन।

हम्मीर रासो : रचयिता – शारंगधर। भाषा – अपभ्रंश। ग्रन्थ – अप्राप्य।

खुमान रासो : रचयिता – दलपति विजय नामक कोई भाट। ग्रन्थ में खुमान नामक राजा के पराक्रम का वर्णन।

Scanned with CamScanner

पृथ्वीराजरासो : आदिकाल का सर्वाधिक प्रसिद्ध और विवादित महाकाव्य। ~~विकासशील~~ विकासशील महाकाव्य के रूप में मान्य। रचयिता – लाहौर (तत्कालीन पंजाब)-निवासी कवि चन्द। ग्रन्थ में 69 सर्ग जिन्हें 'समय' कहा गया है। लगभग एक लाख छन्दों व ढाई हजार पृष्ठों में लिखित। भाषा – डिंगल।

'पृथ्वीराजरासो' के चार रूप उपलब्ध :

1. बृहत् रूप : 69 समय, 16306 छन्द। प्रकाशक – नागरी प्रचारिणी सभा काशी।
2. मध्यम रूप : लगभग 7000 छंद। प्रतियाँ साहित्य संघ अबोहर और जैन ज्ञान भण्डार बीकानेर में सुरक्षित।
3. लघु रूप : 19 समय, 3500 श्लोक। संकलनकर्ता – चन्द्रसिंह (अकबर के सेनापति सुरजसिंह का पुत्र और राजा मानसिंह का भतीजा)।
4. लघुतम रूप : केवल 1300 श्लोक। खोजकर्ता – अगरचन्द नाहटा।

'पृथ्वीराजरासो' को विवादित बनाने वाला विद्वान – डॉ० बूलर।
'पृथ्वीराजरासो' को अप्रामाणिक मानने वाले विद्वान : डॉ० बूलर, हीराचन्द ओझा, डॉ० रामकुमार वर्मा, मुरारीदीन, रामचन्द्र शुक्ल आदि।
प्रामाणिक मानने वाले विद्वान : डॉ० श्यामसुन्दर दास, पण्डित मोहनलाल विष्णुलाल पाण्ड्या, मिश्रबन्धु, हरप्रसाद शास्त्री, अगरचन्द नाहटा आदि।

रासो काव्य परम्परा में 'रासो' शब्द की व्युत्पत्ति :

विद्वान का नाम	व्युत्पत्ति
गार्सा द तासी	राजसूय
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	रसायन
चन्द्रबली पाण्डे, हरिवल्लभ भायाणी, पण्डित विश्वनाथ मिश्र, डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी	रासक

डॉ० दशरथ शर्मा	रासो
कविराज श्यामलदास, डॉ० काशीप्रसाद जायसवाल	रहस्य
नरोत्तम स्वामी	रसिक
हरप्रसाद शास्त्री, विन्ध्येश्वरी प्रसाद	राजपक्ष
विपिनबिहारी त्रिवेदी	रासो

अन्य रासो ग्रन्थ

कुमारपाल रास	ऋषभदास
राम रासो	माधोदास
विनोद रासो	सुमतिहंस
छत्रसाल रासो	डूंगरसी
संगतसिंह रासो	गिरधर चारण
कायम रासो	जान कवि
राणा रासो	सिंढायच दयालदास
बुद्धि रासो	जल्ह कवि
करहिया की रायसो	गुलाब कवि
राउ जैतसी रो रासो	अज्ञात कवि
रतन रासो	कुम्भकर्ण चारण